नवरात्रि और विजयादशमी

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाली शक्ति है उस शक्ति को शास्त्रों ने आद्या शक्ति की संज्ञा दी है। देवी सूक्त के अनुसार-

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

अर्थात् जो देवी अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश और समस्त प्राणियों में शक्ति रुप में स्थित है, उस शक्ति को नमस्कार, नमस्कार, बारम्बार मेरा नमस्कार है। इस शक्ति को प्रसन्न करने के लिए नवरात्र काल का अपना विशेष महत्व है। माँ दुर्गा को प्रसन्न करने हेतु नवरात्र में निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

नवरात्र में साधक को व्रत रखकर माता दुर्गा की उपासना करनी चाहिए। माता दुर्गा की उपासना से सभी सांसारिक कष्टों से मुक्ति सहज ही हो जाती है।

नवरात्रि में घट स्थापना के बाद संकल्प लेकर पूजा स्थान को गोबर से लीपकर वहां एक बाजोट पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर माता दुर्गा की प्रतिमा या चित्र को स्थापित कर पंचोपचार पूजा कर धूप-दीप एवं अगरबत्ती जलाएं। फिर आसन पर बैठकर रुद्राक्ष की माला से किसी एक मंत्र का यथासंभव जाप करें। पूजन काल एवं नवरात्रि में विशेष ध्यान रखने योग्य बातें।

1. दुर्गा पूजन में लाल रंग के फूलों का उपयोग अवश्य करें। कभी भी तुलसी, आंवला, आक एवं मदार के फूलों का प्रयोग नहीं करें। दुर्वा भी नहीं चढ़ाएं।
2. पूजन काल में लाल रंग के आसन का प्रयोग करें। यदि लाल रंग का ऊनी आसन मिल जाए तो उत्तम अन्यथा लाल रंग के काले कंबल का प्रयोग कर सकते हैं।
3. पूजा करते समय लाल रंग के वस्त्र पहनें एवं कुंकुम का तिलक लगाएं।
4. नवरात्र काल में दुर्गा के नाम की ज्योति अवश्य जलाएं। अखंड ज्योति जला सकते हैं तो उत्तम है अन्यथा सुबह-शाम ज्योति अवश्य जलाएं।
5. नवरात्र काल में नौ दिन व्रत कर सकें तो उत्तम अन्यथा प्रथम नवरात्र, चतुर्थ नवरात्र एवं होमाष्टमी के दिन उपवास अवश्य करें।
6. नवरात्र काल में नौ कन्याओं को अंतिम नवरात्र को भोजन अवश्य कराएं। नौ कन्याओं को नवदुर्गा मानकर पूजन करें।
7. नवरात्र काल में दुर्गा सप्तशती का एक बार पाठ पूर्ण मनोयोग से अवश्य करना चाहिए। नवरात्रि में जाप करने हेतु विशेष मंत्र-

1. ऊँ दुं दुर्गायै नमः।
2. ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै।
3. ह्रीं श्रीं क्लीं दुं दुर्गायै नमः।
4. ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।
5. ग्रह दोष निवारण हेतु नवदुर्गा के भिन्न-भिन्न रुपों की पूजा करने से ग्रहों के दोष का निवारण होता है।

विजयादशमी का महत्त्व

आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये।
स कालो विजयो ज्ञेयः सर्वकार्यर्थ सिद्धये।।

अर्थात् आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल तारा उदय होने के समय विजयकाल रहता है इसलिए इसे विजयादशमी कहा जाता है।

विजयादशमी का दूसरा नाम दशहरा भी है। भगवान श्रीराम की पत्नी सीता को जब अहंकारी एवं अधर्मी रावण अपहरण कर ले गया तब नारद मुनि के निर्देशानुसार भगवान श्रीराम ने नवरात्र व्रत कर नौ दिन भगवती दुर्गा की अर्चना कर, प्रसन्न कर, वर प्राप्त कर रावण की लंका पर चढ़ाई की। इसी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन राम ने रावण का वध कर विजय प्राप्त की थी। तब से इसे विजयादशमी के रुप में मनाया जाने लगा।

शमी पूजन-

महाकवि कालिदास रचित रघुवंश महाकाव्य में शमी वृक्ष के सभी पत्तों के स्वर्ण मुद्रा में परिवर्तित हो जाने की रोचक कथा का वर्णन मिलता है। प्राचीन समय की बात है कि एक अति निर्धन परिवार का बालक शिक्षा ग्रहण करने के लिए तब के शिक्षा गुरू आरूणि के आश्रम में पहुँचा। उस निर्धन बालक का नाम कौस्तेय था। गुरू के आश्रम में वह बालक शिक्षा प्राप्त करने लगा और शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात् वह हाथ जोड़कर गुरू से दक्षिणा मांगने का आग्रह किया। क्योंकि वह जानता था कि शिक्षा की पूर्णता पर गुरू को दक्षिणा प्रदान किया जाना अति आवश्यक है। गुरू आरूणि उसकी गरीबी को जानते हुए उसे बिना गुरू दक्षिणा के ही गुरूकुल छोड़ने की आज्ञा प्रदान कर दी। बावजूद कौस्तेय हाथ जोड़े खड़ा रहा और गुरू से दक्षिणा की मांग करने की प्रार्थना करता रहा। इससे गुरू गुस्से में आ गये और उससे दस लाख स्वर्ण मुद्राएं बतौर दक्षिणा मांग ली।

क्रोध में आकर गुरू द्वारा मांगी गयी दक्षिणा राशि के संबंध में कौस्तेय ने गंभीरता से विचार करते हुए सोचा कि दस लाख स्वर्ण मुद्रा जुटा पाना उसके लिए तत्काल पूरी तरह से असंभव है। इसलिए उसने स्वर्ण मुद्रा हेतु तब के हिन्दुस्तान के राजा रघु के दरबार में पहुंचकर गुहार लगाने का निर्णय मन ही मन

लेकर वहां से प्रस्थान कर गया। राजा रघु प्रत्येक बारहवें वर्ष अपना व पत्नी सहित राजकोष की सभी संपत्ति प्रजा को मुक्त हस्त से दान कर सादा जीवन यापन प्रारंभ कर देते थे। कुछ वर्षों बाद राजा रघु के तपस्या के प्रभाव से उनका राजकोष पुनः स्वर्ण मुद्राओं से भर जाता था। जिस समय कौस्तेय राजा लघु के दरबार में पहुंचे उससे कुछ समय पूर्व राजा अपना सर्वस्व प्रजा को दान कर चुके थे और इस स्थिति को जानकर याचना करने की जगह उन्होंने चुप रह जाना ही सही समझा लेकिन राजा रघु अपने दरबार में पहुंचे कौस्तेय से बार-बार आने का अभिप्राय पूछने लगे। जिससे मजबूर होकर कौस्तेय ने राजा रघु से अपने आने का कारण स्पष्ट शब्दों में बता दिया। राजा ने कौस्तेय को यह कहकर दस लाख स्वर्ण मुद्राएं अविलंब प्रदान करने के प्रति आश्वस्त कर दिया कि उनके दरबार से याचक आज तक खाली नहीं लौटा है। कौस्तेय को आश्वस्त करने के पश्चात् राजा रघु ने स्वर्ण मुद्राओं के लिए धनाधिपति कुबेर पर शीघ्रताशीघ्र आक्रमण कर देने का दृढ़ संकल्प कर लिया। इस संकल्प की पूर्ति हेतु राजा रघु सैनिकों के साथ लंकापति धनपति कुबेर पर आक्रमण करने के लिए तत्काल प्रस्थान कर गये। रात्रि हो जाने के कारण राजा रघु एक वन में रूक गए जो शमी के वृक्षों से भरा पड़ा था। उधर धनपति कुबेर को यह ज्ञात हो गया कि दरबार में पहुंचे एक याचक को दस लाख स्वर्ण मुद्राएं प्रदान करने हेतु राजा रघु उस पर आक्रमण करने हेतु प्रस्थान कर चुके हैं और शमी के वन में ठहरे हुए है। कुबेर की माया से उस रात्रि वन में मौजूद तमाम शमी वृक्षों के सारे पत्ते स्वर्ण मुद्रा में बदल गए। प्रातः सूर्योदय की लाली जब शमी वृक्षों पर फैली तब सारा जंगल स्वर्ण मुद्राओं की आभा से जगमगा उठा। राजा रघु ने यह सब देख आक्रमण की योजना निरस्त कर दी और कौस्तेय को वहां बुलवाकर दस लाख स्वर्ण मुद्राएं लेने का अनुरोध किया। कौस्तेय ने स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त कर गुरू को दक्षिणा अर्पित की और उधर राजा रघु का स्वर्ण मुद्रा विहीन हुआ कोष फिर से स्वर्ण मुद्राओं से भर गया।

शमी वृक्ष के पत्तों के स्वर्ण मुद्रा में परिवर्तित होने की उक्त घटना शारदीय नवरात्र के विजया दशमी को घटित हुई थी। इस कारण विजया दशमी के अवसर पर शमी की पूजा की जाती है। जिसे लोग श्रद्धापूर्वक अपने घर के पूजा स्थलों सहित रूपया-पैसा-जेवर-गहना आदि के साथ गल्ले, बक्से, तिजोरियों या आलमारियों में धन वृद्धि के लिए रखते हैं, सदियों से लोग धन प्राप्ति के लिए भूतभावन भगवान शंकर, महिषासुर मर्दिनी मां भगवती दुर्गा, माता लक्ष्मी एवं शीतला माता पर फूल सहित विघ्न विनाशक व ऋद्धि-सिद्धि के दाता भगवान गणेश पर शमी की पत्तियां चढ़ाते रहे हैं। कहा जाता है कि वनवास के समय जंगल में भगवान राम ने शमी वृक्ष की लकड़ियों की ही झोंपड़ी बनवाई थी। महाभारत काल में भी अज्ञातवास के समय पांडवों ने अपने महत्वपूर्ण तमाम दिव्यास्त्रों को शमी की घनी पत्तियों के बीच छुपाया था।

इस प्रकार देखा जाए तो विजयादशमी का पर्व मुख्यतः विजय दशमी के रुप में मनाया जाता है। आश्विन मास के नवरात्र में देश के अधिकांश भागों में रामलीला का आयोजन होता है। रामलीला का अंत रावण दहन के साथ ही हो जाता है। रावण दहन के साथ मेघनाद व कुंभकर्ण के भी पुतले बनाकर जलाएं जाते हैं। गुजरात में नवरात्र के अवसर पर गरबा नृत्य का भव्य आयोजन किया जाता है।

कैसे मनाएँ विजयादशमी-

विजयादशमी का पर्व प्राचीन काल से ही पूरे भारत वर्ष में धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व रावण पर राम की विजय के प्रतीक रुप में मुख्यतया मनाया जाता है। इस दिन रावण, मेघनाद व कुंभकर्ण का पुतला बनाकर उन्हें जलाने की परंपरा मुख्य रुप से सर्वत्र प्रचलित है। इस दिन अपराजिता पूजन व शमी पूजन विशेष रुप से कई स्थानों पर किया जाता है। स्कंद पुराण के अनुसार जब दशमी नवमी से संयुक्त हो तो अपराजिता देवी का पूजन दशमी को उत्तर पूर्व दिशा में अपराह्न के समय विजय एवं कल्याण की कामना के लिए किया जाना चाहिए।

धर्मसिन्धु के अनुसार अपराजिता पूजन के लिए अपरान्ह में गांव के उत्तर-पूर्व की ओर जाकर एक स्वच्छ स्थल को गोबर से लीपना चाहिए। फिर चन्दन से आठ कोण दल बनाकर संकल्प करना चाहिए- "मम सकुटुम्बस्य क्षेमसिद्धयर्थ अपराजिता पूजन करिष्ये। इसके पश्चात् उस आकृति के बीच में अपराजिता का आह्वान करना चाहिए। इसके दाहिने एवं बायें जया एवं विजया का आह्वान करना चाहिए एवं साथ ही क्रिया शक्ति को नमस्कार एवं उमा को नमस्कार करना चाहिए। इसके पश्चात् अपराजितायै नमः जयायै नमः विजयायै नमः मंत्रों के साथ षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। इसके पश्चात् यह प्रार्थना करनी चाहिए- 'हे देवी, यथाशक्ति मैंने जो पूजा अपनी रक्षा के लिए की है उसे स्वीकार कर आप अपने स्थान को जा सकती है।

इस प्रकार अपराजिता पूजन के पश्चात् उत्तर-पूर्व की ओर शमी वृक्ष की तरफ जाकर पूजन करना चाहिए। शमी का अर्थ शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। शमी पूजन के लिए इस मंत्र का पाठ करना चाहिए-

प्रार्थना मंत्र-

शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टका।
धारिष्यर्जन बाणानां रामस्य प्रियवादिनी।।
करिष्यमाणयात्रायां यथाकाल सुखं मया।
तत्र निर्विघ्नकर्त्रीत्वंभव श्रीरामपूजिते।।

अर्थ- शमी पापों का शमन करती है। शमी के कांटे तांबे के रंग के होते हैं। यह अर्जुन के बाणों को धारण करती है। हे शमी, राम ने तुम्हारी पूजा की है। मैं यथाकाल विजययात्रा पर निकलूंगा। तुम मेरी इस यात्रा को निर्विघ्नकारक व सुखकारक करो।

इसके पश्चात् शमी वृक्ष के नीचे चावल, सुपारी व तांबे का सिक्का रखते हैं। फिर वृक्ष की प्रदक्षिणा कर उसकी जड़ के पास मिट्टी व कुछ पत्ते घर लेकर आते हैं।

भगवान राम के पूर्वज रघु ने जब कुबेर पर आक्रमण किया तब कुबेर ने शमी एवं अश्मंतक पर स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा की थी तब से शमी व अश्मंतक की पूजा की जाती है। अश्मंतक के पत्र घर लाकर स्वर्ण मानकर लोगों में बांटने का रिवाज प्रचलित हुआ।

अश्मंतक की पूजा के समय निम्न मंत्र बोलना चाहिए-

अश्मंतक महावृक्ष महादोष निवारणम।
इष्टानां दर्शनं देहि कुरु शत्रुविनाशम।।

अर्थात् हे अश्मंतक महावृक्ष तुम महादोषों का निवारण करने वाले हो, मुझे मेरे मित्रों का दर्शन कराकर शत्रु का नाश करो।

इस प्रकार विजयादशमी का पर्व मनाने से सुख-समृद्धि प्राप्त होकर विजय की प्राप्ति होती है।

♦♦♦

दसमहाविद्या कवच

देवी की दसविद्याओं में पूजा-उपासना कर उनके प्रत्येक रूप में विशिष्टता के कारण एक विशेष पद-स्थान दिया गया हैं। और जीवन के विभिन्न आयामों में आने वाले कष्टों के निवारण के लिये इन दसो महाविद्याओं को एक साथ सिद्ध कर कवच निर्माण किया गया हैं।

न्यौछावर राशि 4000/- रु.